MAHAKAUSHAL UNIVERSITY, JABALPUR M.P.

कला एवं समाज विज्ञान संकाय

Syllabus

Faculty of Art & Social Science

Syllabus & Prescribed Books

Subject-Sanskrit

M.A. Semester Examination

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,

JABALPUR M.P.

1st Semester

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	I
Course-	Vaidika vangmaya – rik Samhita and nirukta
Paper-	I

M.A. 1st Semester – Paper : वैदिक वाङ्मय — ऋक्-संहिता एवं निरुक्त MSAN0101-T

Unit – 1 : वैदिक वाङ्मय का स्वरूप

वैदिक साहित्य की अवधारणा

श्रुति-स्मृति का सम्बन्ध

वेदों का स्वरूप, विभाग

ऋक्, यजुः, साम, अथर्व – वेदों का परिचय

संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् – लक्षण एवं महत्त्व

वैदिक काल और वैदिक संस्कृति का संक्षिप्त परिचय

Unit – 2 : ऋक्-संहिता का अध्ययन

ऋग्वेद का प्रथम मंडल–परिचय

प्रमुख सूक्तों का स्वरूप:

अग्नि सूक्त ,इन्द्र सूक्त

विश्वदेव सूक्त ,ऋक्-संहिता की भाषिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ

ऋग्वेद के देवता-तत्त्व, प्रकृति-तत्त्व, दार्शनिक तत्त्व

Unit – 3 : निरुक्त – परिचय एवं विषयवस्तु

निरुक्त का स्वरूप एवं इतिहास

वेदाङ्गों में निरुक्त का स्थान

यास्काचार्य का निरुक्त — मुख्य विषय

निघण्टुओं का परिचय

शब्द-व्युत्पत्ति, अर्थनिर्णय की निरुक्तीय पद्धति

Unit – 4 : निघण्टवः एवं यास्कीय पद्धति

निघण्टु के प्रकार: नाइघण्टुक, नाइगमिक, दैवतीय

निघण्टुओं में शब्दसमूह और अर्थनिर्णय

देवता-निर्वचन (Etymology of Deities)

यास्क की पद्धति — शब्द, अर्थ एवं परम्परा

निरुक्त में प्रयुक्त व्याकरणिक-वैचारिक तत्त्व

Unit – 5 : वैदिक व्याकरण एवं भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

वैदिक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

छन्द, स्वर, संहितापाठ, पदपाठ

धात्वर्थ, शब्दार्थ, रूपनिर्माण

वैदिक व्याकरण एवं आधुनिक भाषाविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

ऋग्वेद एवं निरुक्त में भाषिक उदाहरण

References:

वैदिक व्याकरण – भट्टजी दीक्षित

Vedic Grammar – Arthur A. Macdonell

Vyākaraṇa-darśana – S. D. Joshi

निघण्टु-निरुक्त (काशीनाथ पाण्डुरंग)

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	I
Course-	Poetics: sahityadarpana
Paper-	II

Poetics (काव्यशास्त्र) — साहित्यदर्पण MSAN0102-T

Unit – 1 : काव्यशास्त्र का स्वरूप

काव्य की संकल्पना

काव्यशास्त्र का इतिहास

काव्य-लक्षण (वाक्य, वाक्यार्थ, रसादि)

काव्य के भेद – दृष्य, श्रव्य, रूपक, गद्य-पद्य

आचार्यों का संक्षिप्त परिचय: आनन्दवर्धन, मम्मट, विश्वनाथ

Unit – 2 : साहित्यदर्पण – परिचय

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ का जीवन एवं साहित्य

साहित्यदर्पण की रचना, स्वरूप एवं अध्याय-विभाग

काव्यमीमांसा पर साहित्यदर्पण का प्रभाव

अलंकार-परम्परा में साहित्यदर्पण का स्थान

Unit – 3 : साहित्यदर्पण – प्रथमोल्लास (रसस्वरूपम्)

रस-तत्त्व: स्थायिभाव, व्यभिचारिभाव, संचारी, अनुभाव

रस-निष्पति सिद्धान्त ,नव-रसों का स्वरूप

साहित्यदर्पण में रस-सिद्धान्त की विशेषताएँ

रसध्वनि के संकेत

Unit – 4 : अलंकार-प्रकरणम्

शब्दालंकाराः — अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपकश्लेष

अर्थालंकाराः — उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त, व्यतिरेकादयः

विभाव, अनुभाव एवं रस के सम्बन्ध

साहित्यदर्पण में अलंकारों का वर्गीकरण

लक्षणा, वाच्यार्थ, लक्षणार्थ, व्यञ्जनार्थ

Unit – 5 : काव्यदोष, गुण एवं रीति

काव्यदोषाः — अशुद्धि, आपातति, अर्थदोषः, शब्ददोषः

काव्यगुणाः — माधुर्य, ओज, प्रसाद

रीतिः — वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली रीतियाँ

काव्यप्रयोग में दोष-गुण-रीति का संतुलन

साहित्यदर्पण में गुण-दोष-रीति का विवेचन

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	I
Course-	Sahitya: naishadha and Mricchakatika MSAN0103-T
Paper-	III

Unit – 1 : साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ

विश्वनाथ कविराजस्य जीवनपरिचयः

साहित्यदर्पणस्य रचनाकालः

साहित्यदर्पणस्य साहित्य-परम्परायां स्थानम्

विश्वनाथस्य काव्यशास्त्रीय चिन्तनम्

पूर्वाचार्यैः सह विश्वनाथस्य तुलनात्मक अध्ययनम्

Unit – 2 : साहित्यदर्पण-रचना एवं अध्यायविभागः

साहित्यदर्पणस्य 10–उल्लासाः – संक्षिप्त रूपरेखा

प्रत्येकस्य उल्लासस्य मुख्य-विषयाः

काव्य, रस, अलंकार, दोष-गुण-रीति-प्रकरणम्

साहित्यदर्पण की पद्धति एवं शैली

ग्रन्थस्य प्रामाण्यं तथा प्रभावः

Unit – 3 : प्रथमोल्लास – रसरूपम् (विशिष्ट अध्ययन)

रस-तत्त्व का गहन विश्लेषण

स्थायिभाव, व्यभिचारिभाव, सञ्चारीभाव, अनुभाव

रस-निष्पत्ति का विस्तृत वर्णन

रस-ध्वनि और अलंकार-ध्वनि के संकेत

साहित्यदर्पण में रससिद्धान्त की विशेषता: अनुभव-प्रधानता

अन्य आचार्यों के रससिद्धान्त से तुलना (भरतमुनि, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त)

Unit – 4 : अलंकार-मीमांसा

शब्दालंकाराः — अनुप्रासः, यमकं, श्लेषः

अर्थालंकाराः — उपमा, रूपकं, अतिशयोक्तिः, व्यतिरेकः, दृष्टान्तः

अलंकार-व्यवस्था एवं वर्गीकरणम्

साहित्यदर्पणे अलंकारेषु नवीनता

ध्वनि-अलंकार-रीति का अन्तर्सम्बन्धः

Unit – 5 : काव्यदोषाः, गुणाः, रीतयः

काव्यदोषाः — शब्ददोषः, अर्थदोषः, अशुद्धिः

काव्यगुणाः — प्रसादगुणः, ओजः, माधुर्यम्

रीतयः — वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली

गद्य-पद्य-काव्येषु दोष-गुण-रीति-प्रयोगः

साहित्यदर्पण में त्रिवर्ग का समन्वयात्मक दृष्टिकोण

References:

काव्यप्रकाश – मम्मटाचार्य

Sāhityadarpaṇa (with Sanskrit Commentary) – Pt. K. S. Ramaswamy Shastri

Sāhityadarpaṇa (विश्वनाथकविराज) - सम्पादकः पं. रामनाथ शर्मा

Kāvyālaṅkāraśāstra - वासुदेव शरण अग्रवाल

Sāhityadarpaṇa with English Commentary - Trans, P. V. Kane

विश्वनाथकृत साहित्यदर्पणम् - एड. हरिश्चन्द्र

Studies in Sanskrit Poetics - V. Raghavan

काव्यमीमांसा - राजशेखर

अलंकारशेखर - अच्युतेन्द्र

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	I
Course-	Outline of Culture and Civilization in Sanskrit literature
Paper-	IV

संस्कृत-साहित्ये संस्कृति-सभ्यता-रूपरेखा | MSAN0104-T

Unit – 1 : भारतीय संस्कृति-सभ्यता का संस्कृत-साहित्ये प्रतिपादनम्

संस्कृति-सभ्यता-परिभाषा

वैदिक, उपनिषद्, पुराण-कालीन संस्कृति की विशेषताएँ

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–चतुर्वर्ग व्यवस्था

परिवार, सामाजिक संस्था, वर्णाश्रम व्यवस्था

Unit – 2 : वैदिक-साहित्ये संस्कृति-चित्रणम्

ऋग्वेद: सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन

यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद में सांस्कृतिक संकेत

वैदिक देवता-चिन्तन एवं प्रकृतिपूजा

वेदकालीन परिवार, विवाह, आहार-विहार

शिक्षा-प्रणाली एवं आर्थिकी

Unit – 3 : रामायण-महाभारतयोः सांस्कृतिक स्वरूपम्

रामायण में आदर्श पुरुष-स्त्री-जीवन

महाभारत में धर्म-संप्रदाय एवं राज्यव्यवस्था

गुरुकुल-, परिवार-, सामाजिक-संस्था

युद्ध-नीति, शान्ति-धर्म, नीति-शास्त्र

स्त्री-चरित्रों में सांस्कृतिक मूल्य (सीता, द्रौपदी आदि)

Unit – 4 : काव्य-नाटक-पुराणेषु सांस्कृतिक अध्ययनम्

कालिदासकृतिषु संस्कृति (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्)

संस्कृत-नाटकों में जीवन-व्यवस्था (भास, शूद्रक, बाण)

पुराणों में धर्म-संस्कृति, लोकाचार, आचार-विचार

कला, संगीत, नृत्य, स्थापत्य-चिन्तन

संस्कृत-ग्रन्थों में ग्रामीण-नगरीय जीवन

Unit – 5 : संस्कृत-साहित्य में राजनीति, अर्थ-व्यवस्था एवं समाज

अर्थशास्त्र (कौटिल्य) में राज्य-व्यवस्था

मनुस्मृति-याज्ञवल्क्य-स्मृति–सामाजिक नियम

आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन–वैज्ञानिक संस्कृति

लोककथाएँ, उपाख्यान–लोकसंस्कृति का विकास

साहित्य में त्याग-दान-सेवा-समन्वय संस्कार

References:

Arthashastra – Kautilya (R. Shamasastry Edition)

History of Dharmashastra – P. V. Kane

Cultural Heritage of India – Ramakrishna Mission

Vedic Culture – R. N. Dandekar

ऋग्वेद भाष्य – सायण

Vedic Civilization – S. B. Suryanarayana

Valmiki Ramayana (Critical Edition) – Baroda Oriental Institute

Mahabharata (BORI Edition)

2nd Semester

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	II
Course-	Darshana:Nyaya and vedanta
Paper-	I

दर्शन — न्याय एवं वेदान्त | MSAN0201-T

Unit – 1 : भारतीय-दर्शन-परम्परा

भारतीय-दर्शनस्य स्वरूपम्

आस्तिक-नास्तिक-दर्शनानां भेदाः

षड्दर्शन-परिचयः

न्याय-वेदान्तयोः भारतीय-दर्शनपरम्परायां स्थानम्

प्रमाण-मीमांसा का सामान्य परिचय

Unit – 2 : न्याय-दर्शनम् (पूर्व-न्याय)

गौतम-कृत न्यायसूत्रस्य परिचयः

न्यायदर्शनस्य उद्देश्यः – तत्त्वनिर्णयः

षट्-पदार्थाः – द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय

न्याय-प्रमाणानि चारि — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द

हेत्वाभासाः — सामान्यलक्षणम्, भेदाः

न्याय-सिद्धान्त का दार्शनिक मूल्य

Unit – 3 : वेदान्त-दर्शनम् (अद्वैत-विशेष अध्ययन)

उपनिषद्-वेदान्त-सम्बन्धः

ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्यस्य परिचयः

अद्वैत-वेदान्ते ब्रह्मस्वरूपम् — निर्गुण-निर्विशेष

जीव-ब्रह्म-ऐक्य-सिद्धान्तः

मायावादः, अद्वैत-सृष्टिवादः

उपाधि-विवेकः, अविद्या-विचारः

Unit – 4 : विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत-वेदान्त (संक्षेपेण)

रामानुज-सम्प्रदायः — विश्विष्टाद्वैत-तत्त्वम्

ईश्वर-जीव-जगत-सम्बन्धः

माध्वाचार्य-द्वैत-वेदान्तः

भेद-सिद्धान्तः — पंचभेद

भक्ति-तत्त्व एवं मोक्ष-सिद्धान्तः

Unit – 5 : न्याय-वेदान्तयोः तुलनात्मक-अध्ययनम्

ज्ञान-मीमांसा – अनुभूति, प्रमाण-सिद्धान्त

आत्म-तत्त्वम् — न्याय और वेदान्त में भेदाभेदः

ईश्वर-सिद्धान्तः — न्यायमत, वेदान्तमत

मुक्ति-सिद्धान्तः — कैवल्य एवं ब्रह्म-साक्षात्कार

तर्क-श्रुति-अनुभव-त्रय का महत्त्व

References:

Comparative Indian Philosophy – Jadunath Sinha

Indian Logic and Atomism – Radhakrishnan

Tarka, Nyāya and Vedānta Studies – V. Raghavan

Śrībhāṣya of Rāmānuja

द्वैत-सिद्धान्त-सार – माध्वाचार्य

Classical Vedānta – J. A. B. van Buitenen

Brahmasūtra Śāṅkarabhāṣya – Adi Śaṅkarācārya

Advaita Vedānta – Eliot Deutsch

वेदान्त-परिचय – स्वामी चिदात्मानन्द

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	II
Course-	Vyakarana:laghu Siddhant Kaumudi
Paper-	II

व्याकरण - लघुसिद्धान्तकौमुदी MSAN0202-T

Unit - 1 : परिचयः

पाणिनि-व्याकरणस्य परिचयः

अष्टाध्यायी-सिद्धान्तानां संक्षिप्त विवेचनम्

पद-प्रकाराः - संज्ञा, सर्वनाम, क्रियापदम्

लघुसिद्धान्तकौमुदी-रचनाकारः - मद्धवाचार्य

लघुसिद्धान्तकौमुद्याः उद्देश्यः, उपयोगिता

Unit - 2 : संज्ञा-संधि-सर्वनाम

संज्ञा-प्रकारः, वचन-लिंग

संज्ञा-संधि, तद्धित-प्रत्यय

सर्वनाम-प्रकाराः, प्रयोग

लघुसिद्धान्तकौमुद्यां संज्ञा-सर्वनाम-विवेचनम्

Unit - 3 : क्रियापद-धातु-कारक

क्रियापद-प्रकारः – कर्तृ, कर्म, भाव

धातु-संधि, धातुपाठ, धातुप्रत्यय

क्रियापदम् एवं लकार-प्रयोग

कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, सम्बंध, अधिकरण - कारक सिद्धान्त

लघुसिद्धान्तकौमुद्यां क्रियापदम्-कारक-विवेचनम्

Unit - 4 : समास-अव्यय-विशेषण

समास-प्रकाराः – द्वंद्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि

विशेषण-क्रिया-संबंध

अव्यय-प्रकारः, प्रयोग

लघुसिद्धान्तकौमुद्यां समास-विवेचनम्

Unit - 5 : संज्ञा, क्रिया, लकार, वाक्य-रचना

लकार-वृत्तान्त - लट, लिट्, लुङ्, लृट्, विधिलिङ्

प्रत्यय-संधि-विवेचनम्

वाक्य-रचना, साधारण-अर्थनिर्माण

लघुसिद्धान्तकौमुद्यां व्याकरणीय-उपयोगिता

References:

लघुसिद्धान्तकौमुदी - मद्धवाचार्य

Sanskrit Grammar - Arthur Macdonell

A Practical Sanskrit Grammar - R. K. Sharma

लघुसिद्धान्तकौमुदी - Commentary

Sanskrit Grammar - R. K. Sharma

Laghusiddhāntakaumudī - मद्धवाचार्य

A Sanskrit Grammar for Students - Arthur Macdonell

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	II
Course-	sahitya:meghaduta and Uttararamacharita
Paper-	III

साहित्य - मेघदूत (कालिदास) एवं उत्तररामचरित (भास) | MSAN0203-T

Unit - 1 : कालिदास-परिचयः

कालिदासस्य जीवनम्, रचनासम्प्रदायः

संस्कृत-काव्यपरम्परायां कालिदासस्य स्थानम्

मेघदूतस्य काव्यशैली-विशेषताः

Unit - 2 : मेघदूत - परिचय एवं संरचना

मेघदूतस्य विषयवस्तु - यक्षस्य विरहकथा

पूर्वमेघ (पृथ्वी-दूतगमन) एवं उत्तरमेघ (दूत-गमन) विभागः

दूतकाव्यपरम्परा और संदेशकाव्य का महत्त्व

Unit - 3 : पूर्वमेघस्य विश्लेषणम्

यक्षस्य विरहवर्णनम्

प्रदेश, नदी, पर्वत, वनादि प्राकृतिक दृश्यावलोकन

अलंकार - उपमा, रूपक, अनुप्रास, यमक

रस - श्रृंगार, विरह, करुण

Unit - 4 : उत्तरमेघस्य विश्लेषणम्

संदेशप्रेषणम्, यक्षपत्नीको पहुँच

नगर-वन्यस्थल वर्णन

विरह-रस, शृंगार-रस का उत्कर्ष

अलंकार एवं छन्द - मन्दाक्रान्ता

Unit - 5 : भास - उत्तररामचरितम्

भासस्य जीवन, नाट्यपरम्परा

उत्तररामचरितस्य विषयवस्तु - रामायण-उत्तरकाण्ड आधारित कथा

पात्र: राम, सीता, लव-कुश, वसिष्ठ आदि

नाटक का रस-प्रधानता: वीर, करुण, श्रृंगार

संवाद-शैली, अलंकार, नाट्य-धर्म

References:

भास - नाटक संग्रह - के. एस. रामस्वामी शास्त्री

The Plays of Bhāsa - A. B. Keith

Studies in Bhāsa's Dramas - V. Raghavan

Meghadutam - Gopal Raghunath Nandargikar ed.

Studies in Kālidāsa - A. B. Keith

मेघदूत - M. R. Kale Commentary

Studies in Meghaduta - V. Raghavan

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	II
Course-	Society in Indian literature-I
Paper-	IV

भारतीय-साहित्ये समाजः – I MSAN0204-T

Unit – 1 : भारतीय-साहित्यस्य सामाजिकदर्शनम्

साहित्ये समाजस्य स्थानम्

भारतीय-साहित्ये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – चतुर्वर्ग एवं सामाजिक मूल्य

परिवार, वर्ण, आचार, सामाजिक संस्था

साहित्यस्य समाज-संरचना-प्रतिबिंब

Unit – 2 : वैदिक-साहित्ये समाज

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद – सामाजिक मूल्य और संस्थाएँ

परिवार, विवाह, आहार-विहार, शिक्षा

कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, धार्मिक जीवन

आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक संगठन

Unit – 3 : रामायण और महाभारत में समाज

रामायण में आदर्श व्यक्ति, आदर्श नारी

महाभारत में धर्म, नीति, राज्यव्यवस्था

गुरुकुल, परिवार, सामाजिक संस्था

युद्ध, राजनीति, स्त्री-पुरुष चरित्र, सामाजिक मूल्य

Unit – 4 : संस्कृत-काव्य और नाटक में समाज

कालिदास, भास, शूद्रक आदि काव्य एवं नाटकों में समाज

पुराणों में लोकाचार, सामाजिक नियम, धर्म

कला, संगीत, नृत्य, स्थापत्य – सामाजिक जीवन में योगदान

ग्राम्य और नगरीय जीवन का चित्रण

Unit – 5 : समाज और धर्म के अन्य पक्ष

स्मृतियों में सामाजिक नियम

मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति – सामाजिक व्यवस्था

लोककथा, उपाख्यान – समाज का दर्पण

त्याग, दान, सेवा, और सामाजिक सहिष्णुता

References:

Arthashastra – Kautilya

History of Dharmashastra – P. V. Kane

Indian Society and Sanskrit Literature – R. S. Sharma

Cultural Heritage of India – Ramakrishna Mission

Kalidasa and Indian Society – H. P. Shastri

Purāṇic Culture – F. E. Pargiter

3rd Semester

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	III
Course-	Linguistic analysis of Sanskrit Essay and translation
Paper-	I

MSAN0301-T संस्कृतभाषायाः भाषाशास्त्रीय-विश्लेषणम्, निबन्धः च अनुवादः

Unit - 1 : संस्कृतभाषायाः भाषाशास्त्रीय-परिचयः

संस्कृतभाषायाः स्वरूपम्, व्याकरणीय संरचना

ध्वनिशास्त्र (Phonetics) - वर्ण, स्वर, व्यंजन, संधि

शब्दरचना - धातु, प्रत्यय, संज्ञा, सर्वनाम, क्रियापद

वाक्य-संरचना - तत्सम, तद्भव, समास, उपसर्ग, अव्यय

Unit - 2 : भाषाशास्त्रीय विश्लेषण - शब्द, धातु, वाक्य

धातु-वर्गीकरण, लकार-प्रयोग

शब्दों का अर्थ और व्युत्पत्ति (etymology)

समास और उपसर्ग का व्याकरणीय विश्लेषण

वाक्य-समीक्षा, तात्पर्य-निर्माण

Unit - 3 : निबन्ध-लेखनम् (Essay Writing)

निबन्ध लेखन के प्रकार - वर्णनात्मक, आलोचनात्मक, तुलनात्मक

विषय-वस्तु: संस्कृति, साहित्य, दर्शन, समाज

शैली - स्पष्टता, संक्षिप्तता, प्रवाह, रस और अलंकार का संतुलन

उदाहरणात्मक निबन्ध अभ्यास

Unit - 4 : अनुवाद (Translation)

संस्कृत-अंग्रेज़ी/अंग्रेज़ी-संस्कृत अनुवाद

श्लोक और गद्य का अनुवाद, भाव-संग्रह

अनुवाद में शैली, अर्थ और व्याकरण का संतुलन

सांस्कृतिक संदर्भ और अर्थ-सुसंगतता

Unit - 5 : व्याकरण और भाषाशास्त्र के अनुप्रयोग

भाषाशास्त्रीय ज्ञान का निबन्ध और अनुवाद में प्रयोग

ध्वनि-विन्यास और छन्द-संगठन

साहित्यिक एवं गैर-साहित्यिक पाठों में भाषाशास्त्रीय विवेचन

अभ्यास - भाषाशास्त्रीय दृष्टि से पाठ विश्लेषण और अनुवाद

References:

Vyākaraṇa-Practical Application - R. K. Sharma

Sanskrit Linguistics and Composition - M. R. Kale

Sanskrit-English Translation Exercises - R. K. Sharma

Translation in Sanskrit Literature - V. Raghavan

Laghusiddhāntakaumudī (for grammatical reference)

Sanskrit Composition and Essays - V. Raghavan

Nibandha-Rachana - K. S. Ramaswamy Shastri

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	III
Course-	Sahitya, Kadambari and vasavadatta
Paper-	II

साहित्य - कादम्बरी (भास्कराचार्य/चम्पूकवि) एवं वासवदत्त (भास) MSAN0302-T

Unit - 1 : कादम्बरी - परिचय

कादम्बरी रचनाकारः - बाणभट्टः

कादम्बरी का साहित्यिक-परिचय

कादम्बरी में कथा-संरचना, पात्र-वर्णन

लघु-कथा, उपाख्यान और अलंकार प्रधानता

Unit - 2 कादम्बरी - साहित्यिक विश्लेषण

कथा-संचार, पात्र-परस्पर सम्बन्ध

अलंकार - रूपक, उपमा, यमक, अनुप्रास

रस - श्रृंगार, हास्य, करुण

समय, स्थान, वातावरण - काव्यचित्रण

Unit - 3 : वासवदत्त - परिचय

वासवदत्त रचनाकारः - भास

नाटक-परिचय, संरचना, अंक-विभाग

पात्र: वासवदत्त, राजा उर्वशी, अन्य सहायक पात्र

नाटक का उद्देश्य - प्रेम, राजनीति, सामाजिक मूल्य

Unit - 4 : वासवदत्त - विश्लेषण

नाटक में रस - श्रृंगार, वीर, करुण

संवाद-शैली, अलंकार, उपमा, रूपक

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से पात्रों का विवेचन

नाट्य-शैली और साहित्यिक महत्त्व

Unit - 5 : तुलनात्मक अध्ययन एवं साहित्यिक मूल्य

कादम्बरी और वासवदत्त में कथा-प्रस्तुति और पात्र-रचना का तुलनात्मक अध्ययन

रस, अलंकार, शैली का तुलनात्मक विवेचन

भारतीय साहित्य में इन रचनाओं का स्थान और महत्त्व

References:

History of Sanskrit Literature - A. B. Keith

Studies in Sanskrit Prose and Drama - V. Raghavan

Studies in Bhāsa's Dramas - V. Raghavan

Classical Sanskrit Drama - A. B. Keith

वासवदत्त - भास - सम्पादक: के. एस. रामस्वामी शास्त्री

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	III
Course-	Bharatiya jyotish sastra
Paper-	III

भारतीय ज्योतिषशास्त्र MSAN0303-T

Unit – 1 : भारतीय ज्योतिषशास्त्र – परिचयः

ज्योतिषशास्त्रस्य परिभाषा, उद्देश्यः

वैदिक और सामयिक ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय

प्रमुख ग्रन्थ और लेखक: सिद्धान्तशिरोमणि, सार्धज्योतिष

ज्योतिषशास्त्र का भारतीय संस्कृति और जीवन में स्थान

भारतीय ज्योतिषशास्त्र का इतिहास – K. S. Krishnamurthy

Unit – 2 : खगोलिक पद्धति और ग्रह-नक्षत्र

नवग्रह: सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु

नक्षत्र प्रणाली: 27 नक्षत्र, चन्द्र-पथ, राशिचक्र

भुजयोग, ग्रह-स्थितियाँ, त्रिकोण और भाव

ग्रह-गणना और खगोलीय मापन

Unit – 3 : जन्मकुण्डली और राशि-फलक

जन्मकुण्डली रचना: लग्न, ग्रह-स्थिति, भाव

राशिफल का आधार और ग्रह-अर्थ

दोष और योग: केतु-राहु, गुरु-शनि योग

वार्षिक और मासिक भविष्यवाणी की पद्धति

Unit – 4 : प्रासंगिक सिद्धान्त और भविष्यवाणी

दशा-पद्धति: विलम्ब, समय-दशा, अन्तर्दशा

ग्रह-गति, ग्रह-शांति, ग्रह-प्रभाव

जन्मपत्रिका द्वारा सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत भविष्यवाणी

संयोग और योग की विवेचना

Unit – 5 : तुलनात्मक अध्ययन एवं आधुनिक दृष्टि

पारंपरिक और आधुनिक ज्योतिषशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

गणितीय और खगोलीय आधार पर ज्योतिषीय गणना

भारतीय समाज और संस्कृति में ज्योतिषशास्त्र का महत्व

अभ्यास– कुण्डली बनाना, ग्रह-स्थिति विश्लेषण

References:

Indian Astrology: Theory and Practice – K. S. Krishnamurthy

Brihat Parashara Hora Shastra – Parashara

Phalita Jyotisha – B. V. Raman

Siddhanta Jyotisha – P. V. Kane

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	III
Course-	Modern Sanskrit literature
Paper-	IV

आधुनिक संस्कृत साहित्य MSAN0304-T

Unit – 1 : आधुनिक संस्कृत साहित्य – परिचयः

आधुनिक संस्कृत साहित्य का स्वरूप और परिभाषा

नवसंस्कृत आन्दोलन और प्रमुख लेखक

आधुनिक और शास्त्रीय संस्कृत साहित्य में भेद

साहित्यिक विधाएँ: कविता, नाटक, गद्य, निबन्ध

Unit – 2 : आधुनिक काव्य

प्रमुख कवि: जयदेव, भवभूति (नूतन दृष्टिकोण), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का संस्कृत रचनात्मक प्रभाव

आधुनिक कविता में विषय, रस और अलंकार

समाज और जीवन पर आधारित कविता

चयनित काव्यांशों का अध्ययन और विश्लेषण

Unit – 3 : आधुनिक नाटक

प्रमुख नाटककार: भवभूति, भास के नाट्य-परम्परा में आधुनिक परिवर्धन

आधुनिक नाट्य विषय और शैली

सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रतिबिंब

चयनित नाटकों का विश्लेषण

Unit – 4 : आधुनिक गद्य और निबन्ध

आधुनिक गद्य लेखन: उपन्यास, कहानी, निबन्ध

सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषय

भाषा शैली और आधुनिक दृष्टिकोण

चयनित गद्यांशों और निबन्धों का अध्ययन

Unit – 5 : तुलनात्मक अध्ययन और साहित्यिक मूल्य

आधुनिक संस्कृत साहित्य और भारतीय भाषाओं में आधुनिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

नवसंस्कृत लेखकों का योगदान

आधुनिक संस्कृत साहित्य में शैली, रस, अलंकार और सामाजिक उपयोगिता

आलोचनात्मक विश्लेषण और समीक्षा

References:

Modern Sanskrit Literature – M. R. Kale

Studies in Modern Sanskrit Literature – V. Raghavan

Adhunik Sanskrit Gadyah – R. K. Sharma

Modern Sanskrit Essays – V. Raghavan

Modern Sanskrit Drama – A. B. Keith

Sanskrit Plays in Modern Times – V. Raghavan

4th Semester

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	IV
Course-	Dharmasastra
Paper-	I

धर्मशास्त्र MSAN0401-T

Unit - 1 : धर्मशास्त्र - परिचयः

धर्मशास्त्रस्य परिभाषा, महत्त्व, इतिहासः

प्राचीन और मध्यकालीन धर्मशास्त्रों का संक्षिप्त परिचय

शास्त्रों का वर्गीकरण - स्मृति, पुराण, वेदांग, न्याय-सिद्धान्त

भारतीय समाज में धर्मशास्त्र का स्थान और प्रभाव

Unit - 2 : वेदांग और स्मृति ग्रन्थ

वेदांग: प्रयोजन, श्रुतिसंग्रह, सामाजिक नियम

स्मृति ग्रन्थ: मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति

विवाह, परिवार, वर्ण, आचार-धर्म

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष - चार पुरुषार्थ और सामाजिक नियमन

Unit - 3 : धर्मशास्त्र में सामाजिक और नैतिक मूल्य

सामाजिक संगठन: जाति, वर्ण, आश्रम

नीतिशास्त्र: न्याय, दण्ड, कर्तव्य

दान, त्याग, सेवा, समाज कल्याण के नियम

स्त्री-पुरुष संबंध, उत्तरदायित्व, व्यवहारिक नियम

Unit - 4 : न्याय और दण्डशास्त्र

दण्ड और न्याय के नियम

अपराध और दंड, सामाजिक अनुशासन

न्यायालय, शासक और प्रशासन

आधुनिक दृष्टि में धर्मशास्त्र का अनुशीलन

Unit - 5 : तुलनात्मक अध्ययन और आधुनिक उपयोगिता

विभिन्न धर्मशास्त्रों में तुलनात्मक अध्ययन

धर्मशास्त्र और आधुनिक भारतीय कानून

आधुनिक समाज में धर्मशास्त्र का महत्त्व

आलोचनात्मक विवेचना और अध्ययन

References:

History of Dharmaśāstra - P. V. Kane

Comparative Dharma Studies - R. P. Rastogi

Dharma in Modern India - K. S. Sharma

Manusmriti - Commentary, P. V. Kane

Dharmaśāstra Studies - R. P. Rastogi

Ancient Indian Law - K. S. Sharma

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	IV
Course-	Sanskrit bhasha aur vyakaran
Paper-	II

संस्कृतभाषा एवं व्याकरणम् MSAN0402-T

Unit - 1 : भाषा-विज्ञानस्य आधारभूतसिद्धान्ताः

- भाषायाः स्वरूपम्, परिभाषा, प्रयोजनम्
- भाषाविज्ञानस्य प्रकृतिरेव विषयक्षेत्रम्
- वर्णविज्ञानम् - वर्णानां भेदाः, स्वर-व्यञ्जनविभागः
- ध्वनितत्त्वम् - उच्चारणस्थानम्, उच्चारणप्रकाराः, मात्राः
- ध्वनिविचारः - वर्णसमूहाः, संजीवनीभूताः ध्वन्यात्मकाः नियमाः
- ध्वनिसिद्धान्ताः - स्पर्श, नाद, उदात्त-अनुदात्त-स्वरित इत्यादयः

Unit - 2 : शब्दरचना एवं रूपविज्ञानम्

- शब्दनिर्माणप्रक्रिया - धातु, प्रातिपदिक, प्रत्यय
- समासप्रकरणम् - द्वन्द्व, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, अव्ययीभावः
- तद्धितप्रत्ययाः - अर्थभेदाः, प्रयोगाः
- रूपविज्ञानम् - सङ्ख्यावाचकशब्दाः, लिङ्गनिर्णयः, विभक्तयः
- शब्दरूपाणि - पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग प्रातिपदिकानां रूपाणि

- धातुरूपाणि - लकाराः (लट्, लङ्, लुट्, लृट्, विधिलिङ्, लोट्)

Unit - 3 : वाक्यविज्ञानम् एवं प्रयोगः

- वाक्यस्य संकल्पना, वाक्यनिर्माणतत्त्वम्
- कर्तृ-कर्म-क्रियायाः सम्बन्धः
- vākya-śuddhiḥ - अशुद्धि-शोधनम्
- उपवाक्यानि - प्रधानवाक्य तथा गौणवाक्यरचना
- कारकप्रकरणम् - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बन्ध
- वाक्यार्थनिर्णयः - संप्रदात्मक, भावात्मक, कर्तृवाचक, कर्मवाचक प्रयोगाः

Unit - 4 : पाणिनीयव्याकरणम् एवं भाषाशास्त्रीयदृष्टयः

- पाणिनीय-अष्टाध्यायी का स्वरूपम्, संरचना, परिभाषाः
- संहितायाः संज्ञाः - संहितासूत्रम्, संधिप्रकरणम्
- संधयः - स्वर, व्यञ्जन, विसर्गसन्धिः
- परिभाषेन्दुशेखरस्य मुख्यानि सिद्धान्तानि
- व्याकरणदर्शनम् - भाषाशास्त्रस्य पाणिनीयदृष्टिः
- प्रत्याहारपद्धतिः, स्थानप्रकरणम्, इत्संज्ञा

Unit - 5 : भाषा-शैली, अनुवाद-शास्त्र एवं प्रायोगिक-व्याकरणम्

- भाषा-शैली-विचारः
    - शैलीभेदाः - वैदिक-शैली, लौकिक-शैली, काव्य-शैली, गद्य-शैली
    - प्रसादगुण, ओजोगुण, माधुर्यगुणस्य प्रयोगः
    - वाक्य-निर्माणकौशलम्
- अनुवाद-शास्त्रम्
    - अनुवादस्य तात्त्विकाधाराः
    - शब्दानुवादः, भावानुवादः, रूपानुवादः
    - संस्कृतभाषायाः अन्यभाषासु अनुवादप्रक्रिया
    - अनुवाददोषाः – लक्षणभ्रंशः, अर्थभेदः, अनुपयुक्तप्रयोगः

- प्रायोगिक-व्याकरणम्
    - शुद्धलेखनम्, अशुद्धलेखन-शोधनम्
    - व्याकरणीयदोषपरिहारः
    - समास, तद्धित, सन्धि इत्यादीनां व्यवहारिकप्रयोगः
    - पत्र-लेखनम्, सूत्रलेखनम्, संस्कृतनिबन्धलेखन-रचना

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	IV
Course-	Darshana shankhya and Mimamsa
Paper-	III

सांख्य-मीमांसा-दर्शनम् MSAN0403-T

Unit – 1 : सांख्यदर्शनस्य परिचयः

सांख्यदर्शनस्य उत्पत्तिः, ऐतिहासिकपरम्परा

पुरुष-प्रकृतितत्त्वम्

प्रकृतेः त्रिगुणस्वभावः – सत्त्व, रजस्, तमस्

महत्त्वादि-तत्त्वोत्पत्तिक्रमः

पुरुषस्य बहुत्वम्, पुरुषस्वरूपम्

Unit – 2 : सांख्यदर्शनस्य विशदसिद्धान्ताः

द्वैतवादः, पुरुष-प्रकृतिविवेकः

बन्धमोक्षविचारः

कर्तृत्व-भोक्तृत्वसमस्या

सांख्यकारिकायाः प्रमुखाः श्लोकाः एवं व्याख्यानदृष्टयः

सांख्यदृष्ट्या दुःखत्रयविमोचनम्

Unit – 3 : पूर्वमीमांसादर्शनस्य आधारभूततत्त्वानि

मीमांसादर्शनस्य स्वरूपम्, प्रयोजनम्

वेदस्य नित्यत्वम्, अविच्छिन्नता, अपौरुषेयत्वम्

धर्मस्वरूपम् – "कोदनालक्षणो धर्मः"

वाक्यविचारः – विधिवाक्य, निषेधवाक्य, मन्त्र-ब्राह्मणविभागः

मीमांसासूत्रकारः जैमिनिः – सूत्रविन्यासः

Unit – 4 : मीमांसादर्शनस्य विस्तारः

अर्थापत्ति, अनुपलब्धिः, उपमानम् इत्यादीनां प्रामाण्यानि

शाबरभाष्यस्य विशेषाः

कर्मकाण्डः – मुख्यधर्माः, यज्ञपरम्परा

अपूर्ववादः – क्रियाफलसिद्धान्तः

संज्ञासूत्राणि, परिभाषासूत्राण

Unit – 5 : तुलनात्मकदृष्ट्या सांख्य-मीमांसा

सांख्य-मीमांसयोः तत्त्वानां तुलनात्मकविश्लेषणम्

पुरुष-प्रकृतिदृष्टेः मीमांसायां प्रभावः

प्रमाणप्रणाली – सांख्यस्य प्रमाणत्रयम्, मीमांसाया षट्-प्रमाणानि

बन्ध-मोक्षसिद्धान्तभेदाः

आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये सांख्य-मीमांसादर्शनयोः प्रयोजनीयता

MAHAKAUSHAL UNIVERSITY,JABALPUR(M.P.)

Department of Higher education ,Govt. of M.P.

Semester wise syllabus for postgraduates

AS recommended by Central board of studies and

Approved by HE the Governor of M.P.

Class-	M.A. previous
Subject-	Sanskrit
Semester-	IV
Course-	Society in Indian literature II
Paper-	IV

भारतीयसाहित्ये समाजः MSAN0404-T

Unit – 1 : भारतीयसाहित्ये सामाजिकचिन्तनम्

- साहित्ये सामाजिकतत्त्वानां प्रतिबिम्बनम्
- प्राचीनभारतीयसाहित्यम् – वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारते समाजः
- वर्णाश्रमव्यवस्था, परिवारव्यवस्था

Unit – 2 : काव्ये समाजचित्रणम्

- कालिदासस्य काव्येषु सामाजिकमूल्यम्
- भवभूतेः नाटकेषु समाजस्थितिः
- बाणभट्टस्य गद्यसाहित्यम् – समाजव्यवस्था

Unit – 3 : मध्यकालीनसाहित्ये समाजः

- भक्तिसाहित्यम् – समाजसमानता, स्त्रीभूमिका, लोकधर्मः
- सूफ़ी-भक्तपरम्परा – समन्वयदृष्टिः
- लोकसाहित्ये सामाजिकपरिवर्तनम्

Unit – 4 : आधुनिकभारतीयसाहित्ये समाजपरिवर्तनम्

- आधुनिकलेखकानां सामाजिकदृष्टिः
- स्वाधीनतापर्यटनस्य प्रभावः

- स्त्री-नारीवादचिन्तनम्
- दलितसाहित्ये समाजपरिवर्तनम्
- पर्यावरणसमाजचिन्तनम्

Unit – 5 : भारतीयसाहित्ये समाजमीमांसा

प्राचीन-मध्ययुगीन-आधुनिक समाजरूपाणां तुलना

साहित्यस्य समाजपरिवर्तनकारी भूमिका

स्त्रीदृष्टिकोणः–नारिसाहित्ये समाजदर्शनम्

दलित-आदिवासी-अन्यवंचितसमूहानां साहित्ये सामाजिकचित्रणम्

भारतीयसाहित्ये लौकिक-आध्यात्मिक-नैतिक मूल्यसमूहाः